

नुगायति काचिदुद्वितपञ्चमरागम् Gtr. 1, 39. — 2) Jmd mit Gesang begleiten, Jmd (acc.) Etwas vorsingen: (उग्रसेनः) अनुगीयमानो गन्धर्वैः MBh. 1, 7913. — 3) singen. besingen: क्रीडितमनुगायत्तम् Bhāg. P. 6, 1, 60, 4, 39. अनुगीतसत्कथो वेदेषु गुह्येषु च गुह्यवादिभिः 1, 10, 24. 5, 19, 2. श्रूयतां पृथिवीपाल यथैषो ऽर्थो ऽनुगीयते wie man darüber singt, was die alten Weisen darüber singen MBh. 12, 4211. — caus. nachsingen lassen: स्तोत्रीयामनुगापयेत् Gobh. 3, 2, 21. fgg.

— अभि 1) Jmd (acc.) zusingen, zurufen: (पूनः) अभि सौभरे गिरौ । गाय गा इव चर्कषत् RV. 8, 20, 19. इन्द्रम् 32, 13. 46, 14. पुनानम् 9, 103, 1. श्रुपञ्चनैष पवमान् शत्रून्प्रियो न ज्ञारो अभिगीत इन्द्रः 96, 23. mit seinem Gesange erfüllen: भृङ्गराजाभिगीतानि (वनानि) R. 6, 15, 11. incantare: इन्द्राद्याभिर्वै देवा अमुरानभिगायथैरानन्त्यायन् Ait. Br. 6, 32. — 2) singen, besingen: साम Çat. Br. 4, 6, 9, 11. 5, 1, 5, 4. Kāṇḍ. Up. 2, 24, 3. तदप्येष श्लोको ऽभिगीतः Ait. Br. 8, 21, 23. प्रणवम् Kāṇḍ. Up. 1, 3, 2, 4. तदेतद्वाथयाभिगीतम् Çat. Br. 13, 5, 4, 2. fgg. (गायन्तौ) राजधानीषु राज्ञो च समानेष्वभ्यगायताम् R. 1, 4, 24. — Vgl. अभिगेष्ट.

— अत्र heruntersingen so v. a. in Gesängen schmähen, verspotten; अत्रगीत 1) adj. geschmäht, verspottet, elend, erbärmlich, = ध्यातगर्हणा AK. 3, 2, 42. = गर्हित 3, 4, 44, 81. MED. t. 178. Viçva beim Sch. zu Kir. 2, 7. = त्रिगर्हित H. an. 4, 93. = मुकुर्दुष्ट Viçva a. a. O. = मुकुर्दुष्ट ÇKDr. nach derselben Aut. H. an. = त्रष्ट (!) MED. = दृष्ट ÇKDr. nach ders. Aut. अत्रगीतो दशम् Kir. 2, 7. अत्रगीतमिदं सर्वमावभ्यो भक्तकाननम् zum Ueberdruss geworden HARIV. 3483. — 2) n. Gespötte, üble Nachrede, = ज्ञन्य AK. 3, 4, 44, 81. = अत्रवाद H. an. = निर्वाद MED. Viçva.

— आ 1) Jmd (acc.) zusingen: आ प्रभुं गांसि पृथिवीं वनस्पतीन् RV. 8, 27, 2. — 2) ersingen, durch Singen erlangen: यो वाचि भोगस्तं देवेषु आगायत् Çat. Br. 14, 4, 4, 3. fgg. Kāṇḍ. Up. 1, 2, 13. 7, 9. — Vgl. आगातर, आगान.

— उद् Gesang anstimmen, singen; besonders von dem liturgischen Singen gebraucht, nach welchem einer der Priester Udgātar heisst. उत प्रास्तौडुच्चं विद्वा अगायत् RV. 10, 67, 3. AV. 9, 6, 45. Çat. Br. 13, 2, 2, 14, 4, 4, 3. 9, 3, 9. 4, 3, 4, 26. Ait. Br. 3, 34. नवभिरध्वर्युह्रायति TS. 7, 5, 9, 2. LĀṬJ. 2, 6, 2. 10, 3. 6, 10, 8. Kāṇḍ. Up. 1, 1, 1. 10, 10. 11, 7. — उद्गास्यतां किंनराणाम् Kumāras. 1, 8. क्वार्चइसति — उद्गायति क्वार्चित् Bhāg. P. 7, 4, 39. RĀGA-TAR. 3, 370. गेयमुद्गातुकामा Megh. 84. गाथाश्चिरोद्गीताः (काण्डुनाः) R. 5, 91, 7. तदेतत्ते मयोद्गीतं यथातथम् verkündet MBh. 6, 2966. उद्गीतमेतत्परमं तु ब्रह्मा von den Weisen als das höchste Br. verkündet Çvetāçv. Up. 1, 7. besingen: यज्ञः स्वमुच्चैरुद्गीयमानं वनदेवताभिः Ragh. 2, 12. Prāb. 3, 14. vor Jmd (acc.) singen: (मुनिम्) उद्गीयमानं गन्धर्वैः Mārk. P. 18, 23. mit Gesang erfüllen: कंसकारण्टवोद्गीताः (नयः) MBh. 3, 1535. उद्गीत n. Gesang: किंनरोद्गीतभाषिणी MBh. 1, 6569. im Prākṛit: स कालो मद्विबभुमुद्गीदाणां Çāk. Ch. 117, 5. — Vgl. उद्गातर, उद्गाथा, उद्गीति, उद्गीथ.

— प्रोद् zu singen anheben: प्रोद्गीतो मधुपरुतैः स्तुतिं पठतो नृत्यति (समीराः) Prāb. 80, 3.

— प्रत्युद् singend antworten: प्रत्युद्गीतस्नु खल्वेषां तत्रोद्गीता भवति LĀṬJ. 7, 8, 19.

— उप 1) Jmd (dat. acc.) zusingen: in den Gesang einfallen: प्र स्तो-

षुडुपं गांसिषुक्त्वत्सामं गीयमानम् RV. 9, 70, 5. उपास्मै गायता नरः 11. 1. गणास्त्वोपं गायन्तु मारुताः AV. 4, 15, 4. तान्कैतदुपजगौ Çat. Br. 14, 5, 5, 8. नो ऽध्वर्युरूपं गायत् TS. 6, 3, 4, 5. पत्नयः (vgl. P. 3, 1, 85, Kār., Sch.) 7, 3, 9, 3. KĪR. Çh. 13, 3, 16. उपगातार उपगायति Çat. Br. 13, 2, 2, 2. अतिरचयेद्यदन्य उपगायेत् तस्मात्स्वयंप्रस्तुतमनुगीतम् 4, 6, 9, 17. LĀṬJ. 4, 2, 5. vor Jmd (acc.) singen: उपगायति बीभत्सुं नृत्यत्यप्सरसां गणाः MBh. 1, 4809. उपगीयमाना नरीभिः 2, 2027. उपगीतोपनृत्यश्च गन्धर्वीप्सरसां गणैः 5, 4100. 13, 2075. गन्धर्वैरुपगीयतः (partic. pass.) 15, 883. उपगीता die vorzusingen begonnen hat Çig. 4, 57. वीणापेयगायति wohl unter Begleitung der Viṇā vorsingen P. 3, 1, 25, Sch. Vop. 21, 17. mit seinem Gesange erfüllen: उपगीयमाना धमरे राजते वनराजयः MBh. 3, 11606. 17284. — 2) besingen: (जम्बुः) श्रीर्चिता चोपगीता च नित्यमप्सरसां गणैः R. 4, 44, 57. सुरामुरैर्नैरुपगीयमानमकानुभावः Bhāg. P. 4, 16, 27. यत्रोपगीयते नित्यं देवदेवः 3, 7, 20. सप्तसामोपगीतं त्वाम् Ragh. 10, 22. — 3) singen: रथंतरं सामगाश्चोपगाति MBh. 12, 10299. जिह्वामती — न योपगायत्युरुगायगाथाः Bhāg. P. 2, 3, 20. तस्येदमुपगायति von ihm singt man Solches 5, 14, 41. — Vgl. उपगा, उपगातर.

— नि 1) mit Gesang begleiten: वीणामिव वादयतो निगायतः Çat. Br. 3, 2, 4, 6. — 2) singen, verkünden: तथा च श्रुतयो बह्यो नगोता निगमेष्वपि M. 9, 19.

— परि 1) singend herumgehen, — umkreisen, — umwandeln: नृत्यति परिगायति MBh. 6, 75. चितावाकितमुद्गीता त्रिर्धमेन परिगायन् KĀṬJ. Çh. 22, 6, 15. यमगाथाभिः TS. 5, 1, 9, 2. सामभिः Çat. Br. 10, 1, 5, 3. 9, 1, 2, 32. LĀṬJ. 8, 8, 35. रथ्यासु बालकैर्नित्यं ब्रह्मशः परिगीयते R. 6, 11, 38. — 2) nah und fern überall singen, besingen, verkünden als: रतैः कर्मगुणैर्लोकैः नामाग्नेः परिगीयते MBh. 13, 4095. यानि नामानि महात्मनः — ऋषिभिः परिगीतानि 6948. 3, 10427. तस्य कर्माण्युदारणि परिगीतानि मूरिभिः Bhāg. P. 1, 4, 17. देवसेहपरिगीतपवित्रगाय adj. 6, 3, 27. अत्यन्तादि परं यच्च स एव परिगीयते MBh. 1, 252. R. 6, 102, 29.

— प्र zu singen, zu besingen anheben, besingen: प्र वः श्रुष्मणो । देवत्तं ब्रह्मं गायत RV. 1, 37, 4. प्र व इन्द्राय मारुतं गायत 7, 31, 1. 102, 1. मित्राय 5, 68, 1. 6, 45, 4. प्र गायत्रा अगांसिषुः ertönt 8, 1, 7. प्र गायत्रेणं गायत् परमानम् 9, 60, 4. प्र गीय गण आ निष्यथ 6, 40, 1. प्रनगुर्देवगन्धर्वाः R. 2, 91, 26. प्रागायत च तुम्बुरुः MBh. 1, 4810. Bhāg. P. 4, 3, 26. गेयमदुतम् — प्रागायतः R. 1, 4, 31. देवगान्धारं क्वालिक्यं अत्रणामतम् । भैमास्त्रयः प्रज्ञगिरि HARIV. 8689. यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य पुण्या लोके प्रगीयते MBh. 3, 1184. अनाद्यो ह्यमध्यस्तथा चाप्यनतः प्रगीतो ऽकर्मिशो विभुः 12, 13249. प्रगीत der einen Gesang erhoben hat. singend: प्रगीतवर्चाराण (उत्सव. KATHAS. 16, 85. अज्ञाङ्कतैः पत्निगणैः प्रगीतैरिव MBh. 13, 723. dasselbe oder von Gesang erfüllt, wiederhallend: पुंभिः स्त्रीभिश्च संयुष्टः प्रगीत इवाभवत् (गिरिः) MBh. 14, 1758. नूपुरशिक्षितरवैः कोकिलाभिरुतेन च । गन्धर्वनगरप्रख्यं प्रगीतमिव तदनम् ॥ R. 1, 9, 17. यथा मे रुदितैरेवं प्रगीतेव पुरी भवेत् 5, 26, 39. 6, 94, 28. n. Gesang: कंसान् — मधुरप्रगीतान् Bṛ. 3, 13. KĀURAB. 37 (vgl. jedoch den Sch.). singender Vortrag, ein Fehler der Recitation, ÇIKSHU 33.

— अभिप्र zu Jmds (acc.) Lobe zu singen anheben: इन्द्रमभि प्रगीयत RV. 1, 3, 1. 37, 1. 8, 13, 4. 9, 13, 2.

— संप्र singen: या गाथाः संप्रगायन्ति MBh. 8, 1836. singend ausspre-